दक्षिण एशियाइयों ने वाशिंगटन में कैसे बनाई भारतीय लॉबी

फ्रांसिस सी. असीसी

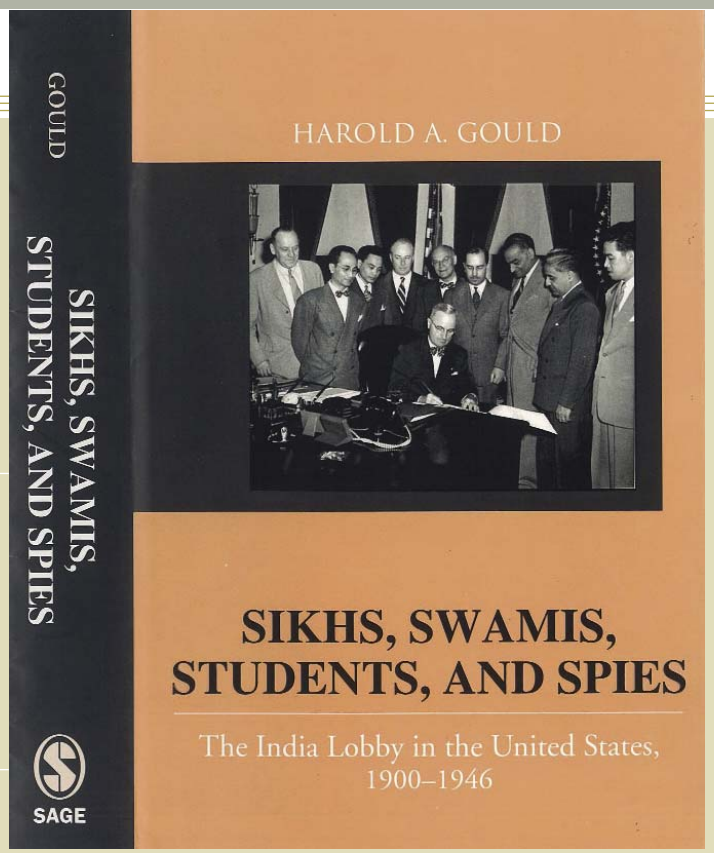

सिख्स, स्वामीज़, स्टूडेंट्स एंड स्पाइज़ द इंडिया लॉबी इन द युनाइटेड स्टेट्स, 1900-1946, ***हैरॅल्ड ए. गोल्ड,*** *हार्डकवर, 460 पृ./ सेज पब्लिकेशन्स, थाउज़ैंड ओक्स, कैलिफोर्निया, 2006*

भारत-अमेरिकी सम्बन्धों पर हैरॅल्ड गोल्ड की यह रोचक प्रस्तुति कई मायनों में महत्वपूर्ण है: एक तो इसलिए कि यह 1940 के दशक में वाशिंगटन ,डी.सी. में 'इंडिया लॉबी' के प्रयासों की सफलता का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती है; उससे भी बढ़कर यह पहली बार विदेश मंत्रालय के उस कर्मचारी की पहचान जाहिर करती है जो लॉबी के प्रयासों में हाथ बंटाता रहा, उनकी बात अमेरिकी जनता और समाचार माध्यमों तक पहुंचाता रहा। गोल्ड इस बुद्धिजीवी को मित्र बताते हैं। और अंततः हैरॅल्ड गोल्ड की यह कृति यू.एस.इंडिया पोलिटिकल एक्शन कमिटी, अमेरिकी कांग्रेस में सक्रिय द इंडिया कॉकस, सेनेट के फ्रेंड्स ऑफ़ इंडिया समूह और इंडियन अमेरिकन फ़ोरम फॉर पॉलिटिकल एजुकेशन जैसे भारत के पक्ष में जनमत तैयार करने में जुटे समूहों के प्रयासों को उनके सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करती है।

संख्या में कम होते हुए भी-1910 में उत्तरी अमेरिका में 5000 से भी कम दक्षिण एशियाई थे- दक्षिण एशियाइयों ने अमेरिका में राजनीतिक रूप से लामबंद होने की प्रक्रिया शुरू कर दी। उनका उद्देश्य भारत में ब्रिटिश साम्राज्य से स्वतंत्र होना और अमेरिका में अपने नागरिक अधिकार सुनिश्चित करना था।

इतिहासकार जोन जेनसेन ने उस युग में अमेरिका में दक्षिण एशियाइयों की स्थिति का वर्णन करते हुए लिखा, ''आव्रजन से बाहर रखे गए, राजनीतिक गतिविधियों के कारण उत्पीड़ित, अपने देश वापस भेज दिए जाने की धमकी तलवार की तरह सिरों पर टंगी, नागरिकता से बाहर रखे गए, जमीन के स्वामित्व से वंचित, जिन राज्यों में उनकी जनसंख्या खासी थी वहां जीवनसाथी के चुनाव के मामले में भी नियंत्रित भारतीयों और अमेरिकियों के बीच एक बहुत चौड़ी खाई थी।''

इसके बाद हुए राजनीतिक जागरण के महत्वपूर्ण कार्यकर्ता कौन थे? उन्होंने कैसे संस्थानों का सृजन किया, एक नवजात समुदाय को अपने नागरिक अधिकारों के लिए लड़ने के लिए कैसे एकजुट किया? और राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी.रूज़वेल्ट के शब्दों में ''भारतीयों के विरुद्ध संवैधानिक भेदभाव'' का अंत करने वाले लूस-सैलर विधेयक पर 2 जुलाई 1946 को राष्ट्रपति हैरी एस. ट्रूमैन के हस्ताक्षर कैसे हो पाए? इस विधेयक के लागू होने पर भारतीय आप्रवासियों के लिए अमेरिकी नागरिकता की राह खुली।

यूनिवर्सिटी ऑफ़ वर्जिनिया में दक्षिण एशियाई अध्ययन के प्रतिष्ठित विद्वान गोल्ड उजागर करते हैं कि कैसे अमेरिका में रह रहे मुट्ठीभर राजनीतिक रूप से जागरूक दक्षिण एशियाइयों के जनमत तैयार करने के प्रयास के कारण अमेरिकी नागरिकों का एक महत्वपूर्ण वर्ग, अमेरिकी कांग्रेस के अधिकांश सांसद और यहां तक कि स्वंय अमेरिकी राष्ट्रपति तक भारत की स्वतंत्रता को समर्थन देने के महत्वपूर्ण निर्णय से जुड़े। कैसे इन लोगों ने अमेरिका में भारत के प्रति सहानुभूति रखने वाले समूहों और व्यक्तियों से सम्पर्क करने के क्रम में संस्थान निर्माण की दिशा में अत्यावश्यक कदम उठाया।

इस अध्ययन ने कई अनजाने नायकों पर से विस्मृति का आवरण भी हटाया है। रावलपिंडी में जन्मे जे.जे. के नाम से प्रख्यात सरदार जगजीत सिंह ऐसे ही एक नायक हैं जो ''अमेरिकी इतिहास में इंडिया लॉबी की यात्रा के अंतिम चरण के सूत्रधार'' के रूप में सामने आते हैं। राजनीतिक और सामाजिक मुख्यधारा में भारतीयों की उपस्थिति दर्ज़ कराने का श्रेय जे.जे. को जाता है। उनके काम से परिचित एक व्यक्ति की टिप्पणी है, ''कांग्रेस के गलियारों में लगातार दिखने और ढेरों काम करवाने के बाद भी कोई यह नहीं कह सकता कि जे.जे. के कारण किसी को परेशानी हुई हो।'' गोल्ड बताते हैं कि न्यूयॉर्क के आर्थिक जीवन और महानगरीय जीवनशैली में डूबकर केशधारी जे.जे. एक खुशपोश, खुशदिल, पश्चिमी रंग में रंगे भारतीय के रूप में उभरे। वह 'अपने आप में भारत के पक्षप्रचारक' बन गए। जे.जे. इंडियन चैम्बर ऑफ़ कॉमर्स के संस्थापक तो थे ही, इंडिया लीग ऑफ़ अमेरिका पर भी उनकी मजबूत पकड़ थी। उन्होंने इन दोनों संस्थाओं को एक ऐसे सशक्त पक्षप्रचार तंत्र में बदल दिया जो दक्षिण एशिया के हितों को वाशिंगटन, न्यूयॉर्क ही नहीं, बल्कि पूरे ही अमेरिका में सफलतापूर्वक प्रक्षेपित कर रहा था। गहरी दूरदृष्टि से काम लेते हुए जे.जे. ने प्रस्ताव रखा कि लीग संस्कृति और दर्शन के बजाय राजनीति और प्रचार पर अधिक ध्यान दे। उन्होंने लीग की सदस्यता भारतीयों तक ही सीमित न रखने और कुछ महत्वपूर्ण अमेरिकियों को भी इससे जोड़ने की नीति भी प्रस्तावित की।

जे.जे. के पुराने जानकार, विदेश मंत्रालय के भूतपूर्व अधिकारी और विद्वान रॉबर्ट क्रेन ने लेखक को उनकी कार्यशैली बताई: ''वह हफ्ते में दो-तीन बार डी.सी. आते- शहर के सबसे बेहतरीन होटलों में से किसी एक में एक बढ़िया सुइट बुक करवाते, पीने-पिलाने का शानदार इंतजाम करते और वहां संवाददाता सम्मेलन आयोजित करते। संवाददाता सम्मेलन की घोषणा पहले ही कर दी गई होती थी। उनके संवाददाता सम्मेलन की खबरें हर समाचार एजेंसी प्रकाशित-प्रसारित करती। समाचार व्यवसाय की मनोवृत्ति को भांपकर चतुर जे.जे. हमेशा किसी सेनेटर या कांग्रेसमैन को साथ लाते.....उनमें जनसम्पर्क की अद्भुत प्रतिभा थी''।

जे.जे. मानते थे कि आव्रजन के मुद्दे और भारत की राजनीतिक स्वतंत्रता के प्रश्न को युद्ध के बाद भारत से अमेरिका के व्यापार के विस्तार से जोड़कर प्रस्तुत किया जाए तो अमेरिकी व्यापारी समुदाय आकर्षित हो पाएगा। 1945 की शुरुआत में कांग्रेस के समक्ष दिए गए एक बयान में जे.जे. ने इस सम्भावना को प्रस्तुत भी किया—''40 करोड़ भारतीयों को व्यापारिक दृष्टि से कभी देखा ही नहीं गया है। वहां अमेरिकी वस्तुओं के लिए बहुत बड़ा बाजार मौजूद है।''

गोल्ड के अनुसार दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान इंडिया लॉबी के क्रियाकलाप चरम पर थे। तब तक भारतीय अमेरिकी तंत्र में काम करना, संचार माध्यमों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाना सीख चुके थे और मजबूत राजनीतिक सम्बन्ध गढ़ चुके थे। वह याद दिलाते हैं: ''आज के पैमाने से तो खैर उनके प्रयास और उपलब्धियां बहुत कम ही दिखेंगे लेकिन उनके युग के संदर्भ में, उन्हें उपलब्ध सीमित संसाधनों को देखते हुए उनका प्रयास उल्लेखनीय और उनकी उपलब्धियां प्रभावशाली ही कही जाएंगी।''

गोल्ड कहते हैं कि इसी दौर में इंडिया लॉबी ने विदेश मंत्रालय में एक 'भेदिया' तैयार कर लिया था। गोल्ड की कृति की विशेषता यह है कि उन्होंने इस व्यक्ति की पहचान सार्वजनिक भी कर दी है, असल में तो पुस्तक उसी को समर्पित की गई है। यह भेदिया और कोई नहीं विदेश मंत्रालय के तत्कालीन अधिकारी रॉबर्ट क्रेन थे।

गोल्ड के अनुसार द वाशिंगटन पोस्ट के स्तम्भकार ड्रयू पीयर्सन के हाथ किसी तरह स्वतंत्रता पूर्व भारत में अमेरिका के विशेष दूत विलियम फ़िलिप्स का राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूज़वेल्ट को भेजा गुप्त संदेश लग गया जिसमें कहा गया था कि भारतीय स्वतंत्रता को लेकर ब्रिटिश पक्ष की अहम्मन्यता और हठधर्मी के कारण एशिया में युद्ध प्रयास खटाई में पड़ गए थे। वह जोर देकर कह रहे थे कि राष्ट्रवादियों की भावनाओं की कद्र करते हुए ब्रिटिश अधिकारियों को युद्ध की समाप्ति पर भारत को स्वतंत्रता देने की स्पष्ट घोषणा कर देनी चाहिए। पीयर्स ने राजदूत की टिप्पणी पोस्ट में प्रकाशित की तो वाशिंगटन में सनसनी फैल गई, इंडिया लॉबी के लिए यह अंधे को दो आंखें मिलने जैसी बात हुई।

गोल्ड साफ कहते हैं कि पीयर्सन को सूचना क्रेन ने उपलब्ध करवाई थी जो उन दिनों विदेश मंत्रालय के सांस्कृतिक सम्बन्ध प्रभाग के इंडिया डेस्क के कनिष्ठ अधिकारी थे। रॉबर्ट क्रेन के माता-पिता मिशनरी थे और इस तरह उनका बचपन बंगाल में बीता था। बाद में वह दक्षिण एशिया के ख्यातनाम इतिहासकार सिद्ध हुए। क्रेन की मृत्यु 1997 में हुई।

यह पुस्तक सभी दक्षिण एशियाई अमेरिकियों और साथ ही भारतीय उपमहाद्वीप से ऐतिहासिक सम्बन्धों में रुचि रखने वाले भारतीयों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह उन्हीं की कहानी है।

द होप एंड द रिएलिटी: हैरॅल्ड गोल्ड की पुस्तक यू.एस.-इंडिया रिलेशंस फ्रॉम रूज़वेल्ट टू रीगन नई दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई और मुंबई की अमेरिकी लाइब्रेरी में उपलब्ध हैं।

फ्रांसिस सी. असीसी *कैलिफोर्निया के पोर्टल indolink.com के स्तम्भकार हैं।*